This question paper contains 4 printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : 5192

Unique Paper Code : 205102 C

Name of the Paper : प्रश्नपत्र II : प्राचीन और पूर्व मध्यकालीन कविता

(प्रवेशवर्ष 2011 और तत्पश्चात्)

Name of the Course : B.A. (Hons.) हिंदी

Semester : I

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. 'कबीर वाणी के डिक्टेटर हैं ।' इस कथन की पुष्टि कीजिए । 15

अथवा

अमीर खुसरो की काव्य-कला का विश्लेषण कीजिए ।

2. सूरदास के 'भ्रमरगीत' का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए । 15

अथवा

गीतिकाव्य परम्परा में विद्यापति का स्थान निर्धारित कीजिए ।

3. तुलसीदास की समन्वय भावना पर प्रकाश डालिए । 15

अथवा

मीरा के काव्य में परम्परा के प्रति विद्रोह का स्वर सुनाई देता है । सोदाहरण व्याख्या कीजिए ।

P.T.O.

4. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** काव्यांशों की (लगभग **300** शब्दों में) संदर्भ सहित, व्याख्या कीजिए : 2×7.5=15

(क) देख-देख राधा रूप अपार ।

अपरूब के बिहि आनि मिलाओल

खिति-तल लावनि-सार ॥

अंगहि-अंग अनंग मुरछायत ।

हेरए पड़ए अथीर ॥

मनमथ कोटि मथन करू जे जन,

से हेरि महि-मधि गीर ॥

(ख) अब का डरौं डर डरहिं समानां,

जब थैं मोर तोर पहिचांनां ।

जब लग मोर तोर करि लीन्हा, भै भै जनमि जनमि दुख दीन्हा ।

आगम निगम एक करि जांनां, ते मनवां मन मांहि समांनां ।

जब लग ऊँच नीच करि जांनां, ते पसुवा भूले भ्रम नांनां ।

कहि कबीर मैं मेरी खोई, तबहि राम अवर नहीं कोई ।

(ग) मधुकर काके मीत भए ।

द्यौस चारि करि प्रीति सगाई, रस लै अनत गए ।

डहकत फिरत आपने स्वारथ, पाषँड अग्र दए ।

चाँड सरैं पहिचानत नाहीं, प्रीतम करत नए ॥

मूँड उचाट मोलि बौराए, मन हरि हरि जु लए ।

'सूरदास' प्रभु धुति धर्म ढिग, दुख के बीज बए ॥

(घ) धूत कहौ, अवधूत कहौ, राजपूतु कहौ, जोलाहा कहौ कोऊ ।

काहू की बेटी सों, बेटा न ब्याहब, काहू की जाति बिगार न सोऊ ॥

तुलसी सरनाम गुलामु है राम को, जाको रुचै सो कहै कछु ओऊ ।

माँगि के खैबो, मसीत को सोइबो, लैबो को एकु न दैबे को दोऊ ॥

5. निम्नलिखित पाठांशों में दिए गए निर्देश के अनुसार किन्हीं **दो** का रचना-कौशल (लगभग **डेढ़ सौ** शब्दों में) विश्लेषित कीजिए : 2×7.5=15

(*i*) छाप-तिलक तज दीन्हीं रे, तो से नैना मिला के ।

प्रेम बटी का मदवा पिलाके

मतवारी कर दीन्हीं रे, मो से नैना मिला के ।

'खुसरो' निजाम पै बलि-बलि जइए,

मोहे सुहागन कीन्ही रे, मोसे नैना मिला के ।

– प्रस्तुत कव्वाली में 'सुहागन' शब्द की व्याख्या कीजिए ।

(*ii*) म्हाँ गिरधर आगाँ णनाच्या री ॥

णाच-णाच म्हाँ रसिक रिझावाँ, प्रीति पुरातण जाँच्याँ री ।

स्याम प्रीत री बाँधि घूँघरयाँ मोहण म्हारो साँच्याँ री ।

लोक लाज कुलरा मरजादाँ जगमाँ णेक णा राख्याँ री ।

प्रीतम पल छब णा बिसरावाँ, मीराँ हरि रँग राच्याँ री ॥

– प्रस्तुत पद में कृष्ण के प्रेम के किस स्वरूप की अभिव्यक्ति हुई है ?

(*iii*) सिखवति चलन जसोदा मैया ।

अरबराइ कर पानि गहावत, डगमगाई धरनी धरे पैया ॥

कबहुँक सुंदर बदन बिलोकति, उर आनंद भरि लेति बलैया ।

कबहुँक कुल-देवता मनावति, चिरजीबहु मेरौ कुँवर कन्हैया ॥

कबहुँक बल कौं टेरि बुलावति, इति आँगन खेलौ दोउ भैया ।

सूरदास स्वामी की लीला, अति प्रताप बिलसत नँदरैया ॥

— प्रस्तुत अंश में वात्सल्य की मार्मिकता पर विचार कीजिए ।

(*iv*) गोरी सोये सेज पर मुख पर डारे केस ।

चल खुसरो घर आपने, रैन भई चहुँ देस ॥

खुसरो रैन सुहाग की जागी पी के संग ।

तन मेरो मन पीउ को दोऊ भए एक रंग ॥

— इन दोहों में निहित अलौकिक स्वर की व्याख्या कीजिए ।